

# New Year Puja - You Should Be Satisfied Within

Date : 31st December 2001  
Place : Kalwe  
Type : Puja  
Speech : Hindi & English  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	01 - 04
English	-
Marathi	-

### II Translation

English	05 - 08
Hindi	-
Marathi	09 - 10

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

देर हो गई और आप लोगों की प्रेम की शक्ति मुझे खींच के लाई है यहाँ। कुछ तो आपकी माँ की तबियत ठीक नहीं है और इच्छा शक्ति जबरदस्त है। उसी के बूते पर चल रहा है।

मैं चाहती हूँ आप लोगों की भी इच्छा शक्ति जबरदस्त हो जाए। इस मामले में आपने क्या किया वो खुद ही सोचना चाहिए। अपनी ओर नज़र करके देखें कि आपने इसमें कौन सी मेहनत की? आप ध्यान करते हैं, ध्यान में आप गहनता लाएँ और सोचिए कि आप एक संत हैं। और आपको क्या करना चाहिए? माँ ने आपको संत बना दिया है। अब आपको आगे क्या करना चाहिए? अपनी दुरुस्ती तो करनी है। इसमें कोई शक नहीं। आगे आपको क्या करना चाहिए? अपनी दुरुस्ती आप करिए, पर उसके बाद जब वो फलीभूत हो गई और जब पूर्णत्व को आप पहुँच गए, तब आप क्या कर रहे हैं? तब भी आप सिर्फ ध्यान में जाते हैं या प्रोग्राम में जाते हैं और वहीं तक चलता है। इसके आगे क्या किया? आपको ये दान मिला है आपकी आत्मा के आधार से। आत्मा ने आपको पुनर्जन्म दिया, तो आप इससे आगे क्या कर रहे हैं, ये आपको देखना चाहिए। कौन सी प्रगति

आप कर रहे हैं कि सिर्फ इस शक्ति को अपने लिए, अपने बच्चों के लिए आप इस्तेमाल करें? ये बहुत जरूरी है क्योंकि मैंने देखा है कि पार होने पर भी लोगों में दोष रह जाता है। पूर्णता आनी चाहिए। जब तक आप दूसरों से संबंधित हो कर के सहजयोग का कार्य न करें, आपको पता ही नहीं चलेगा कि आप के अंदर कौन से दोष रह गए हैं। यहाँ तक कि लोग आते हैं और पैसा बनाते हैं। ऐसे बहुत से लोग हैं जो सहजयोग में आने के बाद पैसा बनाते हैं बाद में जरूर वो खुल जाते हैं, दिखाई देता है और बेकार परेशानी होती है। सो फायदा क्या?

आप यहाँ पैसा कमाने नहीं आए हैं। आप यहाँ धर्म बाँधने आये हैं। और धर्म को मानना चाहिए। और बंबई शहर में हमने सुना है कि अनेक तरह के अधर्म चल पड़े हैं जो 20-25 साल पहले यहाँ बिल्कुल नहीं थे। एक तो आजकल के सिनेमा जो बन रहे हैं, उसकी शुद्धता बहुत कम है। ऐसे सिनेमा देखना ही नहीं चाहिए। आप इतने लोग ऐसे सिनेमा न देखें तो वो सिनेमा चलेंगे ही नहीं और वैसे चल भी नहीं रहे हैं। पर जो गन्दे सिनेमा होएंगे वो लोगों को पसन्द नहीं। लोग चाहते हैं कि

अच्छे ऐसे सिनेमा बनें कि जिसको कुटुम्ब जा कर देख सके।

एक ये बात हो गई। और भी अत्यंत मलेच्छ, मन्दे तरीके से लोग गन्दी-गन्दी चीजें पढ़ते हैं। आप लोग नहीं। आप लोग पढ़ते नहीं हैं। मैं मानती हूँ। पर अखबार में भी बहुत अश्लील चीजें लिखी जाती हैं। सो सबसे पहले अपने को निर्मल कर लेना चाहिए। सबसे बहुत है लोगों में कि उनकी आँखें चारों तरफ दौड़ने लगती हैं। जिनकी आँखें इधर-उधर दौड़ती हैं वो सहजयोगी हैं ही नहीं। आँखें स्तब्ध, निश्चल होनी चाहिए। ये पहली पहचान है। गर अब भी आँखें इसकी तरफ, उसकी तरफ ऐसे दौड़ती हैं तो इसे कहना चाहिए, अभी आप सहजयोगी नहीं।

दूसरे लालच। आप में अगर अब भी लालच बाकी है तो आप सहजयोगी नहीं हो सकते। और ये लालच एक दिन खुल जाएगी। पहली चीज है लालच छूटनी चाहिए।

पर श्री कृष्ण ने तो कहा है कि पहली चीज है गुस्सा छूटना चाहिए। जब तक गुस्सा आपको आए तो सोचना चाहिए कि आप अभी सहजयोगी नहीं हैं। किसी ने हमें गुस्सा होते देखा नहीं। सब लोग कहते हैं कि माँ आप तो गुस्सा होते ही नहीं और कभी-कभी ऐसी बातें हो जाती कि उस पर किसी को भी गुस्सा आ जाए, मैं कहती हूँ, क्या फायदा? गुस्से से कोई फायदा नहीं।

आज बताना मुझे ये है कि आप अपनी

ओर नज़र करें और नज़र से देखें कि आपके अंदर अभी तक कौन से दोष बचे हैं। इसी को हम कहते हैं कि आप अपनी सफाई करो। निर्मल तत्व अपने अंदर लाएं। उससे जो दोष हैं वे पूरी तरह से नष्ट हो जाएंगे। क्या फायदा है इन दोषों को रखने से। उससे किसी को आज तक फायदा नहीं हुआ। अधिकतर लोग तो जेल ही चले गए और जो नहीं गए हैं उन पर लोग थूकते हैं। इसलिए आप लोगों से मुझे बताना है एक ही बात कि आप दूसरों के दोषों की तरफ मत देखिए। अपने दोषों की तरफ देखिए और देखिए कि आप में क्या दोष है। गुस्सा आप में आता है? आप के अब भी आँख में लालसा है? और आपको Attraction है सब चीजों के लिए? ये खरीदें, वो खरीदें, ये लाएँ, वो लाएँ। ये सबसे ज्यादा अमेरीका में था लेकिन America एक दम बड़े भारी आघात से दब गया। पागल जैसे ये खरीद, वो खरीद। इसके घर जा, उसके घर जा। हाँ अगर खरीदना ही है तो ऐसी चीज खरीदो जो हाथ से बनी हो। जिसमें कल्पना हो, जिसमें आपकी सृजन शक्ति दिखाई दे। ऐसे लोग बेचारे जो इतनी बढ़िया-बढ़िया चीजें बनाते हैं, उसको कोई नहीं खरीदता। फालतू की चीजे खरीदते हैं। इन फालतू की चीजों से न तो आपका भला होगा और न ही उन लोगों का जो इतनी अच्छी चीजें बनाते हैं। हरेक चीज में अगर आप कलात्मक हो जाएँ। घर में हरेक चीज जो आए वो कलात्मक होनी चाहिए। पचासों बर्तन रखेंगे

पर एक कायदे का बर्तन नहीं। कारीगरों से ये जो बनी हुई चीजें हैं, उनका संगोपन होना चाहिए, अगर आप सहजयोगी हैं। बेकार की चीजें आप खरीदते रहते हैं, जिनका कोई अर्थ नहीं। यहाँ तक मैंने देखा है कि औरतें साड़ियाँ खरीदेंगी। साड़ियों पर साड़ियाँ और एक भी साड़ी कायदे की नहीं। अजीब-अजीब, उसमें क्या-क्या बना देते हैं भूतों जैसी चीज। अच्छी सुन्दर और कल्पना से भरी हुई आप दो साड़ियाँ रखें, बनिस्वत आप 50 साड़ियाँ लें। अपने देश में अभी भी कलात्मकता का Appreciation है। उसको जानना है उसको समझना है। मैं देखती हूँ जब घरों में जाओ तो अजीब भूत जैसे रंग लगे हुए हैं। भूत जैसी Decoration हैं।

आप लोग सहजयोगी हैं। आप को समझना चाहिए कि कौन सी चीज सौन्दर्य पूर्ण है। और सौन्दर्य को समझना चाहिए। तभी आप अपने जीवन को भी सुन्दर बनाएँगे। कि जो आदमी आपसे मिले या औरत आप से मिले वो ये कहे कि बहुत ही बढ़िया आदमी है। बहुत ही सुन्दर है। जिस तरह से आप अपने को सौन्दर्य से सजाएँगे इसी तरह से आप उसके वातावरण और घरों को सौन्दर्य से सजाएँगे यह पहली पहचान है। अगर सहजयोगी भूत जैसा घूमता हो तो वो किस काम का। कायदे से कपड़े पहनना, कायदे से बातचीत करना, कायदे से सबसे व्यवहार करना, सुन्दर-सुन्दर चीजों से अपने घर को सजाना। फूलों से भी सजा सकते हैं।

अपने यहाँ बगीचा लगा लिया। मतलब सौन्दर्य दृष्टि सबसे पहले सहजयोगियों में आनी चाहिए। फालतू की बहुत सी चीजें घर के अंदर भरी हुई हैं आजकल क्योंकि बाजार हैं। बाजार में जाते हैं वहाँ कुछ खरीदते हैं। ऐसी जितनी भी चीजें हैं, उठा कर होली कर दीजिए बेकार की चीजों की। प्लास्टिक का आजकल इतना हो गया है कि गिलास भी दूँदना हो तो वो प्लास्टिक। अरे ये तो बहुत ज्यादाती है। मैं तो प्लास्टिक इस्तेमाल नहीं कर सकती। प्लास्टिक की साड़ियाँ हो गईं। प्लास्टिक का ये हो गया। इतना उपयोग प्लास्टिक का आ गया है कि उससे आदमी बीमार पड़ने का बड़ा अंदेशा है। बच्चे मरते हैं। सब कुछ है। तो जहाँ तक हो सके प्लास्टिक इस्तेमाल नहीं करें। जहाँ तक हो सके। पर आजकल सभी चीज में प्लास्टिक आ गया है। खासकर बम्बई में तो बड़ी मुश्किल है कि यहाँ तक कि सोफा सैट भी प्लास्टिक का बनाते हैं। बैठना है तो प्लास्टिक में, पहनना तो प्लास्टिक, चलना तो प्लास्टिक और अब थोड़े दिन में मोटरें भी प्लास्टिक की बनाएँगे। सो आपका प्लास्टिक से कोई मतलब नहीं। आप सहजयोगी हैं। मैं ये नहीं कहती कि आप चोगा पहन के घूमो। ये नहीं है सहजयोग में। कायदे के कपड़े पहनिए। कायदे से रहें। कोई ऐसी बात नहीं है कि जिससे आप साधू बाबा दिखाई दें। कोई ढोंगबाजी नहीं। पर जो चीज आपके लिए हितकारी नहीं वो नहीं इस्तेमाल करनी चाहिए। उससे दूर रहना चाहिए

और बच्चों को भी बचाना चाहिए।

दूसरी बात सहजयोग में मैंने देखा कि सब लोग चाहते हैं कि मैं उनके घर जाऊँ। आप क्यों नहीं समझते कि मैं आपके घर आऊँ, ऐसा आपने क्या किया? या फिर जिसको देखो वही हमारे घर आना चाहता है! मैं कहीं भी जाती हूँ मुझे आराम से रहने नहीं देते। आपने अभी कुछ भी नहीं किया है।

आप किसी भी तरह से ये इच्छा बनी रहने दीजिए और ये सोचिए कि अभी आपकी औकात क्या है? आप क्या चाहते हैं? ऐसी क्यों चाहत करें जिससे आपकी माँ को तकलीफ हो। ऐसे क्यों काम करना जैसे हम कहीं से आए, आकर सामने खड़े हो गए। ऐसा नहीं करिए। समाधान, अगर सहजयोग में नहीं आया तो आप बेकार हैं। जहाँ भी हैं, माँ हमारे साथ हैं, इस प्रकार एक समाधानी वृत्ति होनी चाहिए। उसी से आपकी प्रगति होगी। जिस चीज़ की दुनिया में प्रगति होती है, वो सब कुछ समाधान में रत है। जब आप समाधानी नहीं और पूरे समय आप दबते रहें सबके सामने तो उससे क्या फायदा? समाधान से जहाँ आप हैं वहीं माँ है ऐसा जब आपको महसूस होगा तभी माना जाएगा कि आप सहजयोगी हैं। जहाँ बैठे हैं, सामने आना, स्टेज पर चढ़ना, इसकी ज़रूरत नहीं किसी समाधानी आदमी को। हमें सबके बारे में मालूम है पर समाधान ऐसी चीज़ है कि जिससे गहराई में आप मुझे पा सकते हैं और मैं

आपको जान सकती हूँ। मैं चाहती हूँ कि अब जिस दशा में आप आएँ अब आप उस समाधान को प्राप्त हों और देखें कि आप जो भी कर रहे हैं उससे आपको समाधान मिलें।

आप सहजयोग में कार्यरत हों और सहजयोग बढ़ाएँ। आप बहुत समाधानी हो जाएँगे। आपको यह नहीं लगेगा कि माँ के सामने सारी चीज़ें रखें। माँ के सामने खड़े रहें। अधिकतर मैंने ऐसा देखा है कि जो लोग बहुत आगे-आगे करते हैं वो या तो बेईमान होते हैं और या तो वो चोर होते हैं। जो लोग दिल से साफ हैं और जो प्यार में रत हैं वो अपने प्यार में मग्न रहते हैं। अब मैं चाहती हूँ कि अब ये समय आ गया है कि आप लोग अब मेरे ऊपर मेहरबानी करें क्योंकि मुझसे तो सब Vibrations आप खींचते हो और अगर आप लोग ठीक नहीं हैं तो मेरी तबियत खराब हो जाती है। इसलिए आप को बिल्कुल ये निश्चय कर लेना चाहिए कि हम ऐसे बनें कि जिससे माँ जो हैं वो खुश हो जाएँ और फिर उससे जो है दुनिया बदल जाए। आज बहुत देर तक लोग बैठे रहे, कुछ गए भी होंगे। पहचान ये ही है कि आप यहाँ बैठे हैं। शान्ति में बैठे हैं। पहले तो धूम धड़ाका सब लोग इतनी जोर-जोर से चिल्लाते थे, बोलते थे। अब शांत बैठे हैं। ये मेरे लिए तो बहुत ही कमाल ही चीज़ है।

परमात्मा आपको धन्य करें।

# ENGLISH TRANSLATION

## (Hindi Talk)

Today I got late and it is the power of your love which has brought Me here. Your Mother's health is little disturbed and the desire is very strong and things are working out because of that. I want that your power of desire should get stronger, too. You should think for yourself what you have done in this regard. You should introspect and see that what hard work have you done for it. You meditate.... You should bring depth in your meditation. You should think that you are a saint and see what you should do. Mother has made you a saint and now what should you do? You have to make yourself all right. No doubt, you should make yourself all right, but after that when it is done, then what do you do? You go in collectivity. You go into programs and it is limited to that.

What have you done further? You have got this blessing through your spirit. Spirit has given you second birth, so you should see further now what are you doing? How are you progressing or are you are using it only for yourself and for your children? It is very important because I have seen that even after getting Self Realization, people have short-comings. They are not completely cleansed. If you don't get one together with the others and work for Sahaj Yoga, then you will never come to know that what short-comings and negative aspects you have within. Even people come and make money.... There are many people who come to Sahaj Yoga and make money. Later on they are exposed, no doubt, and can be seen, but unnecessarily it is troublesome, so what is the use?

You have not come here to make money. You have come here to awaken your dharma. You should establish dharma. I have heard that in Bombay many kind of adharmas have started, which were not at all here in the past twenty-five years — especially the films. There is very little purity in them. You should not at all see such films. If you people don't see such movies, then they will not be shown at all, they cannot run. You can understand it that no one likes such movies. People want that such movies should be made which the whole family can go and see together. This is one thing and there are all these filthy and stupid horrible kind of books that are read nowadays. I know that you people don't read them. But even in the newspapers they write many obscene things. So you have to make yourself nirmal [pure]. It is seen that the eyes of the people run here and there. Those people are not Sahaj Yogis at all whose eyes flutter here and there. Your eyes have to be steady. This is the first sign of a Sahaj Yogi. If still your eyes are moving here and there, then you should say that he is not yet a Sahaj Yogi. Second thing is greed. If still you have greed, then you are still not a Sahaj Yogi and this greed will be exposed one day.

First thing is that this greed should go away. Shri Krishna has said that you must drop your anger. If you get angry, then you should think that you are not a Sahaj Yogi. Nobody has seen Me getting angry. Everyone says that, 'Mother we have not seen you getting angry.' There are situations in which anyone can get angry, but I say, 'What is the use?' There is no use. What I have to tell you today is that you should introspect and see all the weaknesses you have even now. So I tell you the same thing, that you should cleanse yourself. You should have the nirmal tattwa in you. All your weaknesses should go away from that. What is the use of keeping these weaknesses within? Many of them have gone to jails and those that haven't, people spit on them. I want to tell you only one thing, that don't look at the weaknesses and faults of others. Instead, you should see the faults within yourself. Do you still get angry? Do you still have desire in your eyes and do you have attraction for everything, always thinking to buy this and buy that, to bring this and bring that? This was the most in America, but America today got pressed by a big shock.

Like a mad person buys this ... but if you have to purchase, only then purchase such things which are made by hand, which has art in it and you can see the creativity in it. There are so many artists who

make such nice things and no one will buy them. They will buy all unnecessary things. By these things neither you will be benefited nor those who make such beautiful things. You should get artistic. All the things in the house should get artistic. They will keep fifty kinds of utensils in the house and you find not even one proper utensil. There should be utilization of handmade, artistic things by you, if you are Sahaj Yogis. You keep on buying the things which have no use. The women will keep buying one sari after another and not even one sari will be proper — all such saris, in which they make so weird [perhaps “strange” would be better] things like bhoots. You should keep two saris which are nice, handmade and beautiful instead of keeping fifty saris.

In our country still there is no appreciation of art and creativity. When I go to some house I see that they have painted their houses with weird [*perhaps “strange” would be better*], bhootish colours, bhootish decorations. You are Sahaj Yogis and you should understand what object is beautiful and understand beauty. Only then will you be able to make your life beautiful and so that any man or women who meets you will say that what a nice man or women he or she is. As beautifully you will decorate yourself ... in the same way, you should decorate your environment and houses. It is the thing to see, that if a Sahaj Yogi is roaming like a bhoot, then what is the use of such Sahaj Yogi. To wear the clothes properly, to talk properly, to behave properly with others, to decorate your house with beautiful things.... You can decorate your house with flowers also. Have a garden means you should have the vision of beauty in Sahaj Yogis. There are so many useless things stored in the house because there are markets and they go to markets and buy all useless things. You should burn the Holi [festival in India when they play colors, but one night before they burn the big fire] of all such useless things. This plastic has become so much important now. Even if I have to search for a glass, it will be of plastic. I said it is too much. I cannot use plastic. There are saris of plastic. Use of plastic has come that there is great possibility of human beings getting sick out of it. Children die by plastic. As much as possible, you should not use plastic. But now plastic has come in everything. Especially in Bombay, even the sofa set is made of plastic. To sit on plastic, to wear plastic, to walk on plastic and after some time the cars will also be of plastic.

So you [*Sahaj Yogis*] have no concern with plastic. I don't say that you should wear a gown and walk in Sahaj Yoga. You should wear proper clothes, no such thing is there that you look like a sadhu baba [*Hindu saints who leave their home and family*], no such artificiality, but you should be away from all such things which are not auspicious for you. You should not use it and you should save your children from it.

Second thing which I have seen in Sahaj Yoga is that everyone wants that I must visit their houses. Why don't you understand that what have you done that I should come to your house? Or ... whomever you see wants to come to My house. Wherever I go, you should leave Me peaceful. You have not done anything till now. You should leave this kind of desire in your mind and think that what is your aukat [*status*]? Why do you desire such a thing, which can give trouble to your Mother? Why to do such things like.... I come from somewhere and they stand in front of me. Not to do like this. If you don't have samadhan [ultimate satisfaction] in Sahaj Yoga, then you are of no use. 'Wherever I am, Mother is with me.' Such kind of samadhan should be within you. You will grow with this. Anything which grows in this world is all absorbed in samadhan. If you are not samadhani and keep running in front of everyone all the time, what is the gain from that? With samadhan, Mother is there where you are. When you think like this then you will be considered a Sahaj Yogi. Wherever you are sitting... coming in front of Me ... coming on stage ... it is not required for a Sahaj Yogi.

I know about everyone. Samadhan is such a thing that in the depth of it you can meet Me and now the time has come where you should achieve samadhan. You should see that whatever you are doing, you should get satisfaction. You should come forward to spread Sahaj Yoga and work for Sahaj Yoga, you will see that you will achieve the samadhan. You will not feel like coming in front of Me and telling Me everything. Most of the time, I have seen that all those who come too much forward and in

front of Me are either dishonest or thieves...*[short pause]*. Those who are clean in heart and are enjoying the love are lost in the joy of love within.

So now I want to tell you that the time has come that you should have a little consideration for Me because you absorb all the vibrations from Me and if you people are not all right, then I get sick. So you have to decide seriously that we should become such that Mother should be happy to see us and then the whole world should change. You had to sit for a long time today and many people have gone, but the recognition is this that you people are sitting peacefully in front of Me. Before it used to be that people used to talk and shout, make noise, but you are sitting peacefully. This is very great thing for Me. I'm telling them that how a Sahaja Yogi should feel. You should be satisfied people. Firstly and foremost you have to be satisfied. You just see within yourself if you are satisfied or not. You've got the highest that you wanted, you have got the peace, you've got the joy, and all the blessings of the Divine. Despite that, if you are dissatisfied, you want to do something always that is disturbing. Always some people want to show Me off, want to come forward – or they want to escape Sahaja Yoga.

Firstly, you must spread Sahaja Yoga. How many people have you brought to Sahaja Yoga? Just think of it! We are Sahaja Yogis – Sahaja Yogis means what? You are saints! In this world all the saints who became saints, with very great difficulty, going through lots of tortures, have done so much work. One single saint has so many people whom they have attracted. Of course he couldn't give them Realisation, because I have taught you how to do that. But you just find out what are you doing about Sahaja Yoga. Only meditation is not the point. Meditation for what? For equipping yourself to help others; we need it very much in this Kali Yuga, people who will go all out to help. On the contrary, I find that they are very anxious just to meet Me, to see Me. I have seen all the Indians who come to Cabella must meet Me, must see Me, as if they have a special right with Me. What is the need? What is the need to meet Me? But this is the trouble of, say, our conditioning, that supposing there is some leader, some Minister coming, everybody will go and show off, like to meet him and talk to him – but not a Sahaja Yogi.

You must have self-esteem. Self-esteem by which you should know what is your dignity and how you should be. There are Sahaja Yogis who are excellent, who are very good, who are very self satisfied – I know who they are. And you have to be like that, otherwise you cannot enjoy Sahaja Yoga, you are like all other people trying to hinder into all nonsensical activities. Now this is it.

Today's was a real test, because I just couldn't come earlier. You know what is the traffic nowadays, I just couldn't arrive; and still you were sitting here – this gives me great satisfaction. That they really love Me, and they are really Sahaja Yogis. If you really love Me you must love others who are not Sahaja Yogis and try to give them Realisation. Because you know My age is quite a lot, and how far can I go? I am not going now to many countries, but Sahaja Yoga is growing fast, though I am not going there. It is growing – why? Because people of that country understand their responsibility. You should know what is your responsibility – it is not only towards yourself but it is for the rest of the world, (*that*) you have to work it out and do something about it. Whatever people you can approach, or whatever people you can meet, go all out!

I have also said before, I have seen people who go to some horrible gurus go on talking about their guru, describing their guru. Anybody who meets them, they go on telling them. Not Sahaja Yogis. I don't know, maybe they want to preserve their Realisation. They think if they tell somebody their Realisation will drop out. If you don't spread Sahaja Yoga, what is the use of getting your Realisation? All my labour is wasted on such people, who are for themselves. They want something for themselves.

Now for example, so many girls wanted to marry. There are four times more, five times more than all the boys put together. But if they are not married, they feel very unhappy about it. Doesn't matter! You are now connected to God! Marriage is not always a very great blessing, I tell you, it's not. On the contrary, it can be very binding, it could be very troublesome. So better not feel bad. You should feel



bad when you cannot give Realisations to others. How many people have I given Realisation? Just think about it. All the time, like all the ordinary people, thinking about marriage, and this and that. It's not going to help you. You are something special. And what speciality do you have? What are you doing about it?

I'm sorry at the end of this, our great Ganapatipule, I have to tell you this. But sometimes one has to tell, also. I know you are all, all very good Sahaja Yogis. Also that you have achieved so much. But what is My desire is, that all of you should become like a light and start spreading Sahaja Yoga. In some countries it has happened, it is working out, and people feel so responsible. I am amazed at them, how they are spreading Sahaja Yoga. Now the same request I have to make to you. That please look at yourself, introspect, what have you done? What have you achieved in Sahaja Yoga? Such a satisfaction lies when you really, when you really work hard to spread Sahaja Yoga.

Many people think that coming nearer Me I feel pleased – I am not. That's no recognition. You should never do that. On the contrary, when you will grow really, I will know, Myself. Today is not the day I should have said all this, because it is the day for New Year's Day. But only good decisions are to be taken on the New Year's Day – that's the custom with human beings. So today you all have to take the decision that 'What are we doing for Sahaja Yoga?' 'What are we giving Sahaja Yoga?' 'What is our achievement?' 'Are we sharing with others?'

It's the greatest Truth you have got. Nobody got it – people worked so hard, did so much – nobody could give Realisation! It's only you can give Realisation, it's very surprising. Kabir could not give Realisation to anybody. Gyanadeva could not give Realisation to anybody. All of them have been great, great Saints of great value system and with great understanding. Whatever poetry they have given, people are singing – that's all. But, they cannot give Self Realisation which you can do. With all that power, if you are not giving Realisation, what's the use of giving power to someone like that?

So today's New Year's message is that 'Next year you must give Self Realisation to many people. (To) How many people have you given Realisation?' That's the main thing. Just find out. What have you done throughout the year? I don't know how to count it. But you, yourself count. 'What have we done all these years?' 'What have we achieved?'

Attending My Puja is no favour to Me. Or doing anything for the Puja is no favour to Me. My greatest Puja is that of human beings; and if you can achieve and spread Sahaja Yoga that fast, I'll be very, very grateful to you. I have worked very hard, I have really worked very hard. This Body, this Mind, all My Health, everything, I have done for saving people. And you please also tonight decide and take a view that what Mother is saying is very important and precious. We have to, we have to rise and give Realisation to people. But which is not so common – I am surprised why people are behaving in this manner who are Realised Souls. All my blessings for the New Year, for all of you 'Happy New Year!' But – next year should be full of many Sahaja Yogis who have done work and who have achieved something great.

May God bless you!

# MARATHI TRANSLATION

## (Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari



### कळवा पुजा

प.पू.श्रीमाताजी निर्मला देवीचे भाषण, (सारांग)

कळवा, ३१ डिसेंबर २००१



सहजयोगी म्हणवून घ्यायला आपण लायक राहिलो नाही तर श्री माताजींना त्रास होईल.

आपल्या सर्वांच्या प्रेमाखातर मी इथे आले आहे. माझी प्रकृति तशी ठीक नाही पण इच्छाशक्ति जबरदस्त आहे. म्हणूनच सर्व काही व्यवस्थित चालले आहे. तुम्हा सर्वांची इच्छाशक्ति पण अशीच जबरदस्त व्हायला हवी असे मला वाटते. त्याबाबतीत आपण करत आहोत हे तुमचे तुम्हीच पाहयचे आहे. आपण काय करतो व काय करायला पाहिजे याचा तुम्ही स्वतःशीच विचार करायला हवा. आत्म्याकडून तुम्हाला पुनर्जन्म दिला आहे, भ्रान्तिमधून बाहेर काढले आहे तेव्हा त्यातून पुढची प्रगति साध्य करण्याकडे तुम्ही लक्ष घ्यायला हवे; आपल्याला मिळालेल्या शक्तीचा उपयोग केला पाहिजे, जोपर्यंत दुसऱ्या लोकांना सहजयोग सांगून जागृत करण्याचे कार्य तुम्ही करत नाही तोपर्यंत तुम्हाला मिळालेली शक्ति तुम्ही समजून शकणार नाही व तुमचे दोष तुम्हाला समजणार नाहीत.

मी बरेच लोक असे बघितले आहेत की ते सहजयोगात आल्याबरोही पैसा कमवायच्या मार्ग असतात. कांही जण त्यातून सुधारतात. पण अशा संवयींचा फायदा काय? आजकाल या मुंबई शहरामधे लोकांना सिनेमाचा शोक आहे, तसे मुंबईमधे बऱ्याच अधार्मिक गोष्टी चालतात. आजकालच्या सिनेमांत अशुभता मोठ्या प्रमाणात दाखवतात; खरे तर सगळ्या कुटुंबाला बरोबर घेऊन बघण्यासारखा सिनेमा लोकांना आवडेल. त्याच प्रमाणे गल्ली-गल्ली मधून अत्यंत चाईट प्रकारचे धंदे चालतात. वर्तमानपत्र व मासिकांत अश्लील गोष्टी छापून येतात. हे सर्व सुधारले पाहिजे व वातावरण निर्मल झाले पाहिजे. त्यासाठी दृष्टिमधे निर्मलपणा आला पाहिजे. स्तब्ध व निश्चल नजरेंत पावित्र्य असते; ज्याची नजर सदैव भरकटत राहते ती सहजयोगी नव्हेच. दुसरी गोष्ट म्हणजे लोभ व हांव; कसल्याही गोष्टीच लोभ वाटता कामा नये. त्याचप्रमाणे रागीटपणा सुटला पाहिजे. ज्याला राग येतो तो सहजयोगी नाही. राग मनातूनही गेला पाहिजे.

सर्वात महत्वाची गोष्ट म्हणजे समाधान. तुम्ही जेव्हा सहजयोगाचे कार्य करता तेव्हा तुम्हाला फार समाधान मिळते. आपण जे कांही करतो त्यातून समाधान मिळाले पाहिजे. सहजयोगाच्या कार्यातही समाधान मिळवले पाहिजे. नुसते सगळे श्रीमाताजींना माहीत आहे असे समजण्यांत अर्थ नाही. सहजयोगांतही ज्यांना सारखे पुढे येण्याची धडपड असते त्यांत अधिकतर वेईमान व घोर लोक असतात. जे लोक अंतःकरणाने साफ असतात व प्रेमाने व्यवहार करतात ते समाधानात असतात. आता मला वाटते की समय आला आहे; तेव्हा तुम्ही माझ्यावर एक मेहरबानी करा; तुम्ही माझ्याकडून व्हायब्रेशन्स खेचून घेत असल्यामुळे तुम्ही जर सहजयोगी म्हणून ठीक नसाल तर माझी प्रकृति बिघडते. तेव्हा तुम्ही आता, निश्चय केला पाहिजे की ज्यामुळे श्रीमाताजींना त्रास होऊन त्यांची तब्येत बिघडेल असे तुम्ही कांही करणार नाही व मला प्रसन्नता मिळेल असे वागला.

आपल्याला जग बदलायचे आहे. इथे तुम्ही बराच वेळ बसून आहात. तुम्ही तरीही निवंतपर्णे शांता राहण्यांत तुमची खरी ओळख आहे. तुम्हाला असे शांत असल्याचे पाहण्यात मला फार आनंद होत असतो. म्हणून सहजयोग्यांनी स्वतःबद्दल फार काळजीपूर्वक राहिले पाहिजे. नुसते रोज ध्यान करण्याने कांही साध्य होत नाही. तुम्ही सहजयोगात दुसऱ्यांना मदत करण्यासाठी, या कलियुगातून

त्यांना वाचवण्यासाठी आला आहोत. नुसते मला भेटण्यासाठी वा माझे जवळून दर्शन होण्यासाठी धडपडण्याला अर्थ नाही. भारतीय सहजयोग्यांत ही प्रवृत्ति जास्त आहे. सहजयोग्यांनी आपला आत्मसन्मान राखला पाहिजे. सामान्य लोकांसारखे वागलात तर तुम्हाला सहजयोगाचा खरा आनंद मिळणार नाही. माझ्यावर जितके तुम्ही प्रेम करता तसेच प्रेम अजून सहजयोग्यांत न आलेल्या लोकांबद्दलही तुम्हाला वाटले पाहिजे. त्यांना आत्मसाक्षात्कार देण्याची तळमळ तुमच्यांत असली पाहिजे. मी आता परदेशांत कमी जाते पण तिथे सहजयोग वाढत आहे कारण त्या लोकांना त्याची जबाबदारी आपल्यावरच आहे हे समजले आहे. म्हणून तुम्ही सहजयोग सतत लोकांना सांगत राहिले पाहिजे. नाही तर तुम्हाला मिळलेला आत्मसाक्षात्कार व्यर्थ होईल. तीच गोष्ट सहज विवाहाची, सहजयोगांत विवाह जमलाच पाहिजे म्हणून अस्वस्थ होऊ नका. गणपतिपुळ्यातही मी त्याबद्दल बोलले आहे; सेमिनारमध्ये असे बोलायला बरं वाटत नाही पण या गोष्टी महत्वाच्या असल्यामुळे सांगायला लागतात. माझी इच्छा हीच आहे की तुम्ही तेजस्वी तान्यांसारखे बनावे व आपला प्रकाश सगळीकडे पसरवा. त्यासाठी सतत आत्मपरीक्षण करून

आपण सहजयोगासाठी काय केले, काय करतो इकडे लक्ष द्या. सहजयोगाच्या प्रसारासाठी अंग झटून कार्य करणे यासारखी समाधानकारक व आनंददायक गोष्ट नाही. नवीन वर्षे सुरू होतांना कांहीतरी नवीन संकल्पना निश्चित करण्याची प्रथा आहे. म्हणून आज तुम्ही प्रत्येकाने आपण सहजयोगासाठी काय करणार याचा निश्चय करा. नुसत्या माझी पूजा करण्याचा किंवा पूजा-कार्यक्रमासाठी काम करण्याचा कांही फायदा नाही. आत्मसाक्षात्कार देण्याची शक्ति आजपर्यंत कुणी मानवाला देऊ शकले नाहीत; मोठ-मोठ्या संत पुरुषांनीही ते बमले नाही; पण तुम्हाला ती शक्ति मिळाली आहे. म्हणून सहजयोगाचा प्रसार करण्याचा व जास्तीतजास्त लोकांना जागृति देण्याचा ठाय निश्चय आज करा. सहजयोगाचे असे कार्य तुम्ही केलेत तर तुमचेच माझ्यावर मोठे उपकार होणार आहेत, व जगभर सहजयोग पसरवण्याचे माझे स्वप्न साकार होणार आहे; त्यांतच माझ्या आजपर्यंतच्या परिश्रमांचे सार्थक होणार आहे.

नववर्षाचे तुम्हाला अनंत आशीर्वाद.